भक्ति दर्शन
भक्ति का महासंगम

भक्ति दर्शन

भक्ति का महासंगम

भाषा : हिन्दी

सप्तम अंक

प्रकाशन वर्ष 2018

माह : जून

निर्जला एकादशी

- महेश नवमी
- गायत्री जयंती
- निर्जला एकादशी
- हितोत्सव
- कबीरदास जयन्ती
- मासिक राशिफल

महेश नवमी

महेश नवमी भगवान शंकर को समर्पित दिन है। इस दिन भोले शंकर तथा जगत जननी माता पार्वती की पूजा की जाती है। महेश नवमी ज्येष्ठ मास के शुक्ल पक्ष की नवमी तिथि पर मनाई जाती है। यह माहेश्वरी समाज का प्रमुख त्यौहार है। मान्यता है की इस समाज की उत्पत्ति शिव के वरदान से इसी दिन हुई थी।

महेश नवमी : 21 जून 2018 (गुरुवार)

नवमी तिथि प्रारम्भ : प्रातः 03:51 (21 जून 2018)

नवमी तिथि समाप्त : प्रातः 03:18 (22 जून 2018)

महेश नवमी की पौराणिक कथा :–

एक समय एक नगर में खडगलसेन राजा राज करते थे। उनके राज्य में प्रजा हर प्रकार से सुखी थी, केवल एक ही दुःख था कि राजा की कोई संतान नहीं थी। राजा ने पुत्र प्राप्ति के लिए ऋषियों द्वारा कामेष्ठि यज्ञ करवाया। उस यज्ञ के फलस्वरूप राजा को नौ माह बाद एक पुत्र रत्न प्राप्त हुआ। ऋषियों ने उस बालक को वीर, पराक्रमी होने का आशीर्वाद दिया तथा साथ ही उत्तर दिशा को उसके लिए अशुभ बताया। इसलिए राजा ने राजकुमार के उत्तर दिशा की तरफ जाने पर रोक लगा दी थी। राजकुमार का नाम सुजान कँवर था। वह बहुत पराक्रमी था और युवावस्था में युवराज का विवाह भी हो गया।

एक दिन एक जैन मुनि उस राज्य में आये, और उनके धर्मोपदेश से राजकुमार अत्यंत प्रभावित हुए। उन्होंने जैन धर्म की दीक्षा ग्रहण करी और जैन धर्म का प्रचार–प्रसार करने लगे। धीरे–धीरे राज्य में जैन धर्म पर लोगो की आस्था बढ़ने लगी और वहां कई जैन मंदिरों का निर्माण भी हुआ।

एक दिन राजकुमार कुछ साथियों के साथ शिकार खेलने गए। शिकार की खोज में वे भूल से उत्तर दिशा की ओर बढ़ने लगे। आगे बढ़ने पर उन्होंने देखा की कुछ ऋषि यज्ञ कर रहे थे, उनकी वेद ध्वनि से वातावरण गुंजित हो रहा था। यह देख कर राजकुमार क्रोधित हो गए, और यज्ञ में सभी साथियों के साथ विघ्न उत्पन्न करने लगे। जिस कारण ऋषियों ने उन सबको पत्थर हो जाने का श्राप दे दिया। राजकुमार तथा उनके सभी साथी (72) वहां पर पत्थर बन गए। जिन्हे 72 उमराओ भी कहा जाता है।

राजकुमार का समाचार सुनकर राजा और रानी दोनों ने ही प्राण त्याग दिए। राजकुमार सुजान की पत्नी चन्द्रावती सभी उमरावो की पत्नियो को लेकर ऋषियों के पास गई और अपने पतियों के अपराध की क्षमा याचना करने लगी। ऋषियों ने कहा कि दिया हुआ श्राप विफल नहीं हो सकता पर भगवान भोले नाथ व माँ पार्वती की आराधना करने से वे इस श्राप को विफल कर सकते हैं।

सभी ने सच्चे मन से शिव पार्वती की आराधना की जिससे भोले नाथ और माता पार्वती प्रसन्न हुए। उन्होंने प्रकट होकर उन सभी पत्थर बने उमराओ को फिर से जीवन दान दिया। भगवान् शंकर ने उन सभी को क्षत्रिय कर्म छोड़कर वैश्य कर्म अपनाने को कहा। इसलिए इस समाज को माहेश्वरी समाज कहा जाता है।

गायत्री जयंती

गायत्री को भारतीय हिंदू संस्कृति की जननी मानते हैं। चारों वेदों की उत्पत्ति भी माँ गायत्री से ही मानी गयी है। मान्यता है कि चारों वेदों के ज्ञान से जो पवित्रता आत्मा को मिलती है, वैसी ही पवित्रता अकेले गायत्री मन्त्र को समझने से मिलती है।

कौन हैं देवी गायत्री :–

चारों वेद, शास्त्र और श्रुतियां सभी गायत्री से ही पैदा हुई हैं। वेदों की जननी होने के कारण इन्हें वेदमाता कहा जाता है। ब्रह्मा, विष्णु और महेश तीनों देवताओं की आराध्य भी इन्हें ही माना जाता है इसलिये इन्हें देवमाता भी कहा जाता है। कुछ जनश्रुतियों में इन्हे ब्रह्मा जी की पत्नी भी कहा जाता है।

ब्रह्मा जी का गायत्री से विवाह :–

एक पौराणिक कथा के अनुसार, एक बार भगवान ब्रह्मा ने यज्ञ का आयोजन किया। मान्यता है कि धार्मिक कार्यों में पत्नी का सहभागी होना अत्यंत आवश्यक है, तभी यज्ञ का पुण्यफल मिलता है। किन्तु किसी कारणवश उनकी पत्नी सरस्वती उस स्थान पर नहीं थी। इसलिए संसार के कल्याण हेतु ब्रह्मा जी ने एक ऐसी कन्या से विवाह कर लिया जो बुद्धिमान होने के साथ ही शास्त्रों का भी ज्ञान रखती थीं। शास्त्रों में इनका नाम देवी गायत्री बताया गया है।

माता गायत्री का स्वरुप :–

कथाओं में देवी गायत्री के स्वरुप में 5 सर व 10 हाथ होने का वर्णन है। उनके स्वरूप में चार सर चारों वेदों को दर्शाते है, व उनका पाचवां सर सर्वशक्तिमान शक्ति का प्रतिनिधित्व करता है। ये कमल के उपर विराजमान रहती है, देवी गायत्री के 10 हाथ भगवान विष्णु का प्रतीक है। पुराणों के अनुसार ये माना जाता है कि गायत्री जयंती ज्येष्ठ माह की शुक्ल पक्ष में 11 वें दिन मनाई जाती है। कहते है महागुरु विश्वामित्र ने पहली बार गायत्री मन्त्र ज्येष्ठ माह की शुक्ल पक्ष की ग्यारस को बोला था, जिसके बाद इस दिन को गायत्री जयंती के रूप में जाना जाने लगा।

गायत्री जयंती की तिथि :–

गायत्री जयंती की उत्पत्ति संत विश्वामित्र द्वारा हुई थी, उनका दुनिया में अज्ञानता दूर करने में विशेष योगदान रहा है। गायत्री जयंती गंगा दशहरा के दूसरे दिन आती है। कुछ लोगों के अनुसार इसे श्रवण पूर्णिमा के समय भी मनाया जाता है। श्रवण पूर्णिमा के दौरान आने वाली गायत्री जयंती को व्यापक रूप से स्वीकार किया जाता है। इस वर्ष गायत्री जयंती 23 जून 2018, दिन शनिवार को मनाई जाएगी।

गायत्री की महिमा :–

आरंभ में गायत्री सिर्फ देवताओं तक सीमित थी लेकिन विश्वामित्र के कड़े तप और साधना ने मां गायत्री की महिमा अर्थात गायत्री मंत्र को सर्वसाधारण तक पंहुचाया। अथर्ववेद में मां गायत्री को आयु, प्राण, शक्ति, कीर्ति, धन और ब्रह्मतेज प्रदान करने वाली देवी कहा गया है। महाभारत के रचयिता वेद व्यास गायत्री की महिमा में कहते हैं समस्त वेदों का सार गायत्री है। यदि गायत्री को सिद्ध कर लिया जाये तो यह कामधेनू के समान इच्छापूरक है। जैसे गंगा शरीर के पापों को धो कर तन मन को निर्मल करती है उसी प्रकार गायत्री मन्त्र से आत्मा पवित्र हो जाती है।

गायत्री से बढ़कर पवित्र करने वाला मंत्र और कोई नहीं है। जो मनुष्य नियमित रूप से गायत्री का जप करता है वह हर प्रकार के पापों से मुक्त हो जाता है।

निर्जला एकादशी

हिंदू धर्म में एकादशी का व्रत महत्वपूर्ण स्थान रखता है, इस व्रत के प्रभाव से मनुष्य के सभी पाप क्षीण हो जाते हैं। और मनुष्य की बुद्धि धर्म में प्रविष्ट होती है। प्रत्येक वर्ष चौबीस एकादशियाँ होती हैं। जब अधिकमास या मलमास आता है तब इनकी संख्या बढ़कर 26 हो जाती है। ज्येष्ठ मास की शुक्ल पक्ष की एकादशी को निर्जला एकादशी कहते है इस व्रत मे पानी पीना वर्जित है इसिलिये इसे निर्जला एकादशी कहते है।

निर्जला एकादशी का महत्व क्या है? :–

निर्जला एकादशी के व्रत से साल की सभी 24 एकादशियों के व्रत का फल प्राप्त होता है। एकादशी व्रत से मिलने वाला पुण्य सभी तीर्थों और दानों से ज्यादा है। मात्र एक दिन बिना भोजन और पानी के रहने से व्यक्ति के सभी पापों का नाश हो जाता है। व्रती हवन, यज्ञ करने पर अनगिनत फल पाता है। व्रती विष्णुधाम यानी वैकुण्ठ जाता है। व्रती चारों पुरुषार्थ यानी धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष को प्राप्त करता है।

यदि कोई मनुष्य वर्षभर की एकादशी का व्रत न रख सके, और केवल निर्जला एकादशी पूर्ण नियम से कर ले, तो उसे भी सम्पूर्ण एकादशियों के व्रत जितना ही पुण्य प्राप्त होता है।

निर्जला एकादशी तिथि व मुहूर्त :–

वर्ष 2018 में निर्जला एकादशी 23 जून को है।

एकादशी तिथि आरंभ : प्रातः 03:19 बजे (23 जून 2018)

एकादशी तिथि समाप्त : प्रातः 03:52 बजे (24 जून 2018)

पारण का समय : 13:46 से 16:32 बजे तक (24 जून 2018)

निर्जला एकादशी के व्रत की विधि :–

निर्जला एकादशी की सुबह जल्दी उठकर स्नान आदि के बाद सबसे पहले भगवान विष्णु की पंचोपचार पूजा करें। इसके बाद मन को शांत रखते हुए 'ऊं नमो भगवते वासुदेवाय' मंत्र का जाप करें। शाम को पुनः भगवान विष्णु की पूजा करें व रात में भजन कीर्तन करते हुए धरती पर विश्राम करें। दूसरे दिन किसी योग्य ब्राह्मण को आमंत्रित कर उसे भोजन कराएं तथा जल से भरे कलश के ऊपर सफेद वस्त्र ढक कर और उस पर शक्कर तथा दक्षिणा रखकर ब्राह्मण को दान दें।

इसके अलावा यथाशक्ति अन्न, वस्त्र, पादुका तथा फल आदि का दान करना चाहिए। इसके बाद स्वयं भोजन करें। इस दिन विधिपूर्वक जल कलश का दान करने वालों को वर्ष भर की एकादशियों का फल प्राप्त होता है।

एवं यः कुरुते पूर्णा द्वादशीं पापनासिनीम् ।

सर्वपापविनिर्मुक्तः पदं गच्छन्त्यनामयम् ॥

निर्जला एकादशी व्रत कथा :–

एक बार महर्षि वेदव्यास पांडवों को चारों पुरुषार्थ– धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष देने वाले एकादशी व्रत का संकल्प करा रहे थे। उन्होंने देखा कि महाबली भीम के मन में कुछ

आशंका है, तो उन्होंने भीमसेन से पूछा कि उनके मन में व्रत को ले कर जो भी शंका हो पूछ लें। इस पर भीम ने उत्तर दिया– गुरुदेव! आपने प्रति पक्ष एक दिन के उपवास की बात कही है। मैं तो एक दिन क्या, एक समय भी भोजन के बगैर नहीं रह सकता– मेरे पेट में वृक नाम की जो अग्नि है, उसे शांत रखने के लिए मुझे कई बार भोजन करना पड़ता है। तो क्या अपनी उस भूख के कारण मैं एकादशी जैसे पुण्य व्रत से वंचित रह जाऊंगा?

तब महर्षि वेदव्यास ने भीम से कहा– कुंतीनंदन भीम यदि तुम सभी व्रत नहीं रख सकते तो तब भी तुम सभी एकादशियों का पुण्य प्राप्त कर सकते हो। भीम ने आतुर होकर पुछा– '' वो किस प्रकार गुरुदेव?''

वेदव्यास जी ने उत्तर दिया की निर्जला एकादशी सभी एकादशियों में श्रेष्ठ है। किन्तु इस व्रत को रखना उतना ही अधिक कठिन है। निःसंदेह ही जो भी व्यक्ति इस व्रत का विधि पूर्वक पालन करता है, वह सुख, यश और मोक्ष को प्राप्त करने का अधिकारी बन जाता है। इस व्रत में भोजन के साथ साथ जल ग्रहण करना भी वर्जित है। चूँकि यह सर्वश्रेष्ठ व्रत है इसलिए इस व्रत को यत्न के साथ करना चाहिए। उस दिन 'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय' मंत्र का उच्चारण करना चाहिए और गौदान करना चाहिए।

इस प्रकार व्यासजी की आज्ञानुसार भीमसेन ने इस व्रत को किया। इसलिए इस एकादशी को भीमसेनी या पांडव एकादशी भी कहते हैं।

हितोत्सव

श्री वृन्दावन की पावन नगरी में हर दिन उत्सव होता है, हर व्यक्ति यहाँ पर ठाकुर जी और राधा जी का भक्त है। इस नगरी की छठा किसी विशेष उत्सव में देखने लायक होती है। ऐसा ही एक भव्य रूप देखने को मिला 'हितोत्सव' में। हितोत्सव श्री हित हरिवंश चंद्र महाप्रभु का प्राकट्य उत्सव है, जिसे श्री राधावल्लभ संप्रदाय के लोग बड़ी ही धूम धाम से मनाते हैं। हितोत्सव 24, 25 तथा 26 अप्रैल, अर्थात तीन दिन तक, श्री हिताश्रम सत्संग भूमि, गांधी मार्ग, वृन्दावन में मनाया गया। इसमें भारी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित हुए, और सभी ने तीन दिनों तक विभिन्न कार्यक्रमों का भरपूर आनंद उठाया।

हिन्दू कैलेंडर के अनुसार हर वर्ष वैसाख शुक्ल एकादशी महीने में श्रीहित हरिवंश महाप्रभु जन्मोत्सव मनाया जाता है, इसलिए 2018 में श्रीहित हरिवंश महाप्रभु जन्मोत्सव 26 अप्रैल (गुरुवार) को मनाया गया। श्रीहित हरिवंश महाप्रभु राधावल्लभ संप्रदाय के संस्थापक हैं। उन्हें भगवान कृष्ण की बांसुरी का अवतार माना जाता है। वह प्रेम–भक्ति के अनुयायी और सर्वोच्च शक्ति राधारानी के परम भक्त थे।

''राधा–कृष्णः एक प्राण दो शरीर'', यही विचार इस संप्रदाय की मूल्यवान संपत्ति रही है। उनके पिता श्री व्यास मिश्रा उत्तर प्रदेश के सहारनपुर जिले में देवबंद के गौर ब्राह्मण थे, जो मुगल सम्राट हुमायूं की सेवा में थे।

एक बृजवासी होने के बावजूद, श्री हित हरिवंश जी ने अपना बचपन अपने परिवार के साथ देवबंद में बिताया। श्री राधावल्लभ संप्रदाय के अनुसार, उन्हें सपने में श्री राधा से मंत्र मिला, इस प्रकार वह उनके शिष्य बन गए।

वर्ष 1534 में, श्री हित

हरिवंश बृज लौट आए। इसके बाद, वह स्थायी रूप से वृंदावन में ही रहे। वहां उन्होंने 'श्री राधावल्लभ मंदिर' की स्थापना की और श्री राधारानी की पूजा को सर्वोच्च शक्ति के रूप में प्रचारित किया। दिव्य युगल श्री राधा–कृष्ण के लिए प्यार से भरे उनके सुंदर गीत, आज भी वृंदावन के संकीर्ण मार्गों में गूँजते हैं।

हितोत्सव में तीनो दिन कार्यक्रम सांय 03:30 से 06:30 तक संपन्न हुए। जिसमे कथा व्यास श्रद्धेय श्रीहित अम्बरीष जी ने भक्तों को सत्संग से मंत्रमुग्ध कर दिया। उन्होंने श्री हित हरिवंश जी के जीवन की भी कई कथाओं का उल्लेख किया। समस्त कार्यक्रमों का संचालन भी श्रीहित अम्बरीष जी के नेतृत्व में संपन्न हुआ।

विभिन्न कार्यक्रमों के अंतर्गत ठाकुर जी की झांकी, रास लीला, भजन–संकीर्तन तथा हरिवंश जी की दिव्य कथाएं विशेष थीं। भक्तों के लिए प्रसाद की भी विशेष व्यवस्था की गयी थी। जितने भी श्रद्धालु यहां आये थे उनके भीतर भक्ति की अलख जाग्रत हुई, और अंतिम दिन सभी भक्तों ने नम आँखों से यहां से विदा ली।

कबीरदास जयन्ती

बुरा जो देखन मैं चला, बुरा न मिलिया कोय,
जो दिल खोजा आपना, मुझसे बुरा न कोय।

अर्थ: जब मैं इस संसार में बुराई खोजने चला तो मुझे कोई बुरा न मिला। जब मैंने अपने मन में झाँक कर देखा तो पाया कि मुझसे बुरा कोई नहीं है।

ऐसे ही महान दोहों की रचना करने वाले कबीरदास जी की जयंती, 28 जून 2018 (गुरूवार) को है। उनके द्वारा ऐसी कई विख्यात रचनाएँ हमारे समाज को उनका तोहफा हैं। उनकी जयंती के पावन अवसर पर जानते हैं उनके जीवन के कुछ पहलू –

कबीरदास जी का प्राकट्य :–

कबीर दास जी का जन्म एक ऐसे काल में हुआ था जब समाज पर झूठ, पाखंड और अन्धविश्वास पूरी तरह छाया हुआ था। लोगों में एक दूसरे को लेकर घृणा थी, जात–पात, ऊँच–नीच और छुआ–छूत अपने चरम पर थी। एक ऐसे भटके हुए समाज को राह पर लाना बिलकुल भी आसान नहीं था। और जो इस कार्य को करने का बीड़ा उठाने की हिम्मत रखता हो, ऐसे ही कर्म पुरुष की संसार पूजा करता है।

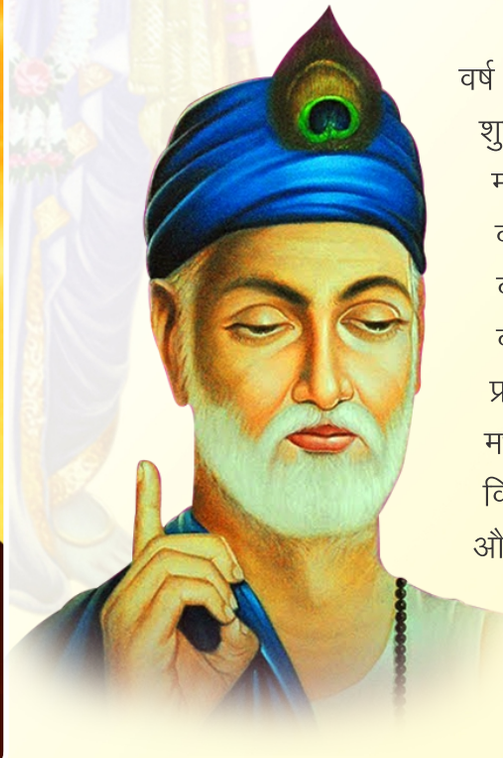

कबीर जयंती प्रत्येक वर्ष के ज्येष्ठ माह की शुक्ल पक्ष पूर्णिमा को मनाई जाती है। कबीर का नाम कबीरदास, कबीर साहब एवं संत कबीर जैसे रूपों में भी प्रसिद्ध है। ये मध्यकालीन भारत के विद्रोही कवि, लेखक और महापुरुष थे।

कबीरदास के जन्म के संबंध में अनेक मत हैं। कबीर

पन्थियों की मान्यता है कि कबीर का जन्म काशी में लहरतारा तालाब में उत्पन्न कमल के मनोहर पुष्प के ऊपर बालक के रूप में हुआ। और उन्हें निरु और नीमा नामक मुसलमान दम्पति ने गोद ले लिया था।

गुरु से मिली राम नाम की दीक्षा :–

महात्मा कबीर समाज में फैले आडम्बरों के सख्त विरोधी थे। उन्होंने लोगों को एकता के सूत्र का पाठ पढ़ाया। उनके दोहे इंसान को जीवन जीने की नई प्रेरणा देते थे। कबीर ने जिस भाषा में लिखा, वह लोक प्रचलित तथा सरल थी। उन्होंने विधिवत शिक्षा नहीं ग्रहण की थी, इसके बावजूद वे दिव्य प्रभाव के धनी थे।

कुछ लोगों का कहना है कि वे जन्म से मुसलमान थे और युवावस्था में स्वामी रामानंद के प्रभाव से उन्हें हिन्दू धर्म की बातें मालूम हुईं। एक दिन, रात के समय कबीर पंचगंगा घाट की सीढ़ियों पर गिर पड़े। रामानन्द जी गंगा स्नान करने के लिये सीढ़ियाँ उतर रहे थे कि तभी उनका पैर कबीर के शरीर पर पड़ गया। उनके मुख से तत्काल 'राम–राम' शब्द निकल पड़ा। उसी राम को कबीर ने दीक्षा–मन्त्र मान लिया और रामानन्द जी को अपना गुरु स्वीकार कर लिया।

उन्होंने स्वयं ग्रंथ नहीं लिखे, मुँह से बोले और उनके शिष्यों ने उसे लिख लिया। इसका प्रमाण उनके इस दोहे से मिलता है–

मसि कागद छूवो नहीं, कलम गही नहिं हाथ।

कबीरदास जी ने हालाँकि शिक्षा नहीं ली, किन्तु वह किसी भी ज्ञानी पुरुष से अधिक ज्ञानी जान पड़ते हैं। क्योकि जो ज्ञान बड़े–बड़े विद्वान या पंडित नहीं ग्रहण कर पाते उसे अज्ञानी सहज ही प्राप्त कर लेते हैं।

पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुआ, पंडित भया न कोय,
ढाई आखर प्रेम का, पढ़े सो पंडित होय।

अर्थात, बड़ी बड़ी पुस्तकें पढ़ कर संसार में कितने ही लोग मृत्यु के द्वार पहुँच गए, पर सभी विद्वान न हो सके। कबीर मानते हैं कि यदि कोई प्रेम के केवल ढाई अक्षर ही अच्छी तरह पढ़ ले, अर्थात प्यार का वास्तविक रूप पहचान ले तो वही सच्चा ज्ञानी होगा।

मृत्यु का रहस्य :–

कबीर ने काशी के पास मगहर में देह त्याग दी। ऐसी मान्यता है कि मृत्यु के बाद उनके शव को लेकर विवाद उत्पन्न हो गया था। हिन्दू कहते थे कि उनका अंतिम संस्कार हिन्दू रीति से होना चाहिए और मुस्लिम कहते थे कि मुस्लिम रीति से। इसी विवाद के चलते जब उनके शव पर से चादर हटाई गई, तब लोगों ने वहाँ फूलों का ढेर पड़ा देखा। बाद में वहाँ से आधे फूल हिन्दुओं ने ले लिए और आधे मुसलमानों ने। मुसलमानों ने मुस्लिम रीति से और हिंदुओं ने हिंदू रीति से उन फूलों का अंतिम संस्कार किया। मगहर में कबीर की समाधि है। जन्म की भाँति इनकी मृत्यु तिथि एवं घटना को लेकर भी मतभेद हैं किन्तु अधिकतर विद्वान् उनकी मृत्यु संवत सन 1518 ई. मानते हैं, लेकिन बाद के कुछ इतिहासकार उनकी मृत्यु 1448 को मानते हैं।

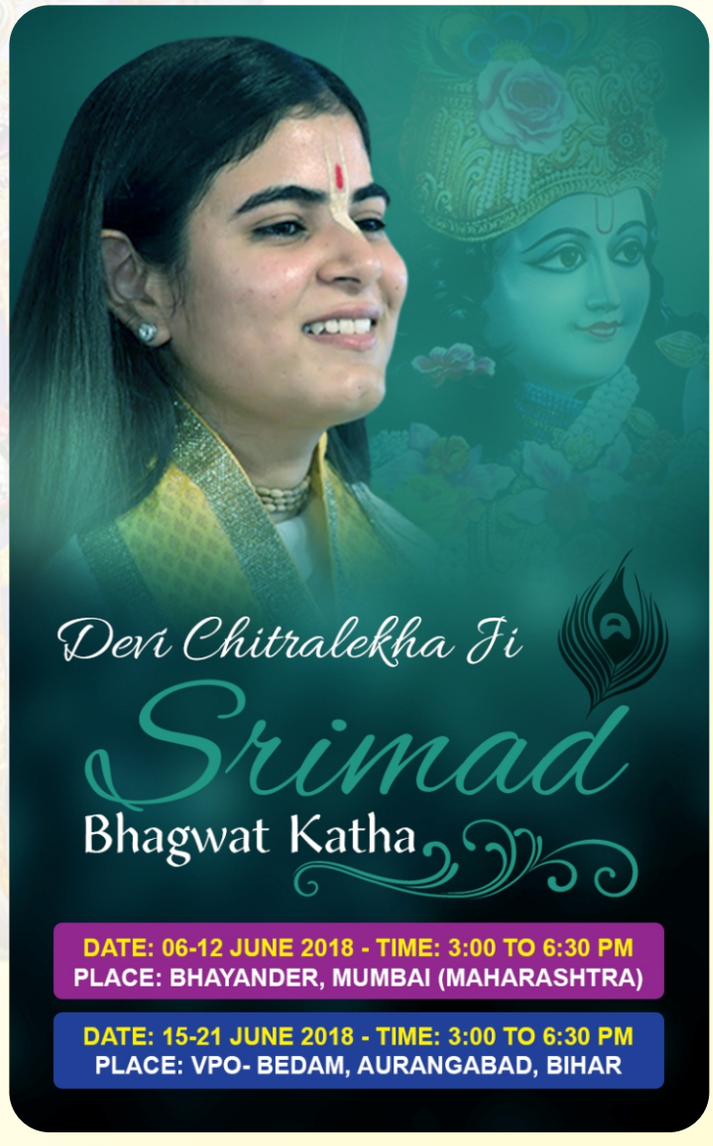

मासिक राशिफल

मेष:

मेष राशि वालों के लिए यह समय मध्यम कहा जा सकता है। पड़ोसियों का सहयोग आपको प्राप्त होगा। मित्रो से थोडा बच कर रहे अन्यथा भारी खर्चे में पड़ सकते है। संतान पक्ष से आपको कुछ अच्छी खबर मिलेगी। बेवजह की यात्रा करनी पड़ सकती है। ससुराल पक्ष से आपको धन लाभ होगा।

आर्थिक पक्ष: इस माह के अंत समय जातक की आमदनी अच्छी होने की सम्भावना है।

स्वास्थ्य: मधुमेह के रोगियों को इस समय राहत महसूस होगी।

कैरियर व व्यवसाय: व्यवसाय करने वालों के लिए यह समय अच्छा रहेगा।

वैवाहिक स्थिति: वैवाहिक जीवन में सम्बन्धों में मधुरता आयेगी।

प्रेम–प्रसंग: प्रेम करने वाले एक दुसरे को थोडा समय दें।

शुभ रंग: लाल रंग

शुभ अंक: 6, 18

वृषभ:

इस राशि वाले जातको के लिए जून का महीना अच्छा नहीं कहा जायेगा। जो उधारी के लिए आपके पास आएँ, उन्हें नजरअन्दाज करना ही बेहतर रहेगा। माह को खास बनाने के लिए शाम को परिवार के साथ किसी अच्छी जगह पर जाएँ। सरकारी नौकरी वालो को यह समय थोडा परेशानी में डाल सकता है इसलिए लापरवाही न बरतें। मित्रों के प्रति मन उदासीन रहेगा।

आर्थिक पक्ष: रुके हुए कार्यो से आर्थिक स्थिति में नुकसान होगा।

स्वास्थ्य: आँखों की समस्या आपको परेशान कर सकती है।

कैरियर व व्यवसाय: नौकरी पेशा लोगो को तरक्की में बाधा उत्पन्न होगी।

वैवाहिक स्थिति: वैवाहिक जीवन मे पारिवारिक अड़चन आ सकती है।

प्रेम–प्रसंग: प्रणय सम्बन्धो में आपसी तालमेल बनाये रखे।

शुभ रंग: गहरा हरा या हल्का नीला

शुभ अंक: 5, 35

मिथुन:

इस राशि वालों के लिए जून का महीना अच्छा नहीं रहेगा। आपका झगाड़ालू स्वभाव आपके दुश्मनों की सूची लम्बी कर सकता है। किसी को खुद पर इतना नियंत्रण न दें, कि वह आपको नाराज कर सके और जिसके लिए बाद में आपको पछताना पड़े। आपके खर्चों में बढ़ोतरी होगी, जो आपके लिए परेशानी का सबब साबित हो सकती है।

आर्थिक पक्ष: आर्थिक स्थिति में प्रगति में बाधा उत्पन्न होगी।

स्वास्थ्य: डाइबिटीज के रोगी अपना खास ख्याल रखे।

कैरियर व व्यवसाय: व्यवसाय में कोई नया प्रयोग न करें। नौकरी में प्रगति के अवसर मिलेगें।

वैवाहिक स्थिति: अपने जीवनसाथी से कोई वादा न करें।

प्रेम–प्रसंग: प्रेम में प्रगाढ़ता होगी लेकिन अति विश्वास से बचें।

शुभ रंग: हल्का हरा, हल्का नीला

शुभ अंक: 1, 10

कर्क:

इस राशि वाले जातको के लिए यह महीना मध्यम रहने वाला है। अटके कामों के बावजूद रोमांस और बाहर घूमना–फिरना आपके दिलो–दिमाग पर छाया रहेगा। अचानक मिली कोई अच्छी खबर आपका उत्साह बढ़ा देगी। परिवार के लोगों के साथ इसे बांटना आपको उल्लास से भर देगा। अपने प्रिय के साथ सैर–सपाटे पर जाते समय जिंदगी को पूरी शिद्दत से जिए।

आर्थिक पक्ष: यह माह आमदनी के लिहाज से अच्छा रहने वाला है।

स्वास्थ्य: मधुमेह के रोगी इस समय ज्यादा ध्यान दें।

कैरियर व व्यवसाय: व्यापार में उठापटक का माहौल रहने वाला है। नौकरी का प्रयास करने वाले सफलता प्राप्त करेंगे।

वैवाहिक स्थिति: वैवाहिक जीवन में अनुकूलता आएगी।

प्रेम–प्रसंग: प्रेम करने वाले प्रयास करते रहें।

शुभ रंग: हरा और पीला रंग

शुभ अंक: 1, 21

सिंह:

इस राशि वालों के लिए यह महीना सामान्य कहा जायेगा। धार्मिक कार्यो में आपकी भागीदारी बढ़ेगी। गुप्त शत्रु इस समय सक्रीय हो सकते है। जातक के कार्यो में शिथिलता रहेगी। जातक बुद्धि का उपयोग फालतू के कामो में ज्यादा करेगा। काम में धीमी प्रगति हल्का–सा मानसिक तनाव दे सकती है।

आर्थिक पक्ष: माह के प्रारम्भ में आमदनी अच्छी रहेगी लेकिन आखिर में कुछ कमी आएगी।

स्वास्थ्य: पीड़ित लोगों को राहत मिल सकती है।

कैरियर व व्यवसाय: नौकरी करने वालों के लिए अपने सहयोगियों से सम्बन्ध मधुर रखने होंगे। इस समय कोई नया व्यापार न शुरू करे।

वैवाहिक स्थिति: वैवाहिक जीवन में आपको सुकून का अनुभव होगा।

प्रेम–प्रसंग: प्रणय सम्बन्धो में गिरावट आएगी।

शुभ रंग: गहरा नारंगी और पीला

शुभ अंक: 6, 24

कन्या:

इस राशि वालो के लिए यह महीना अच्छा नही रहने वाला है। परिवार के साथ शॉपिंग पर जाना संभव लग रहा है, लेकिन शॉपिंग जेब पर भारी भी पड़ सकती है।दोस्तों का रुख सहयोगी रहेगा और वे आपको खुश रखेंगे। जीवनसाथी के सहयोग न मिलने के कारण जातक व्यथित रहेगा जिसके कारण उसे नुकसान सहना पड़ेगा।

आर्थिक पक्ष: किये गए प्रयासो में आप असफलता ही पाएंगे।

स्वास्थ्य: वाहन इस माह न ही चलायें तो अच्छा है।

कैरियर व व्यवसाय: व्यवसाय में निवेश का यह अच्छा समय नही है। नौकरी करने वाले खास कर शिक्षक वर्ग लापरवाही न बरतें।

वैवाहिक स्थिति: आपसी सहयोग की कमी दिखाई देगी।

प्रेम–प्रसंग: भावनाओं को समझने का प्रयास करें।

शुभ रंग: हल्का हरा, हल्का नीला

शुभ अंक: 16, 29

तुला:

इस राशि वालो की लिए यह महीना सामान्य रहेगा। यात्रा का प्रसंग बन रहा है। गहरे विचारों से किसी समस्या का हल निकलेगा। गुप्त शत्रु इस समय सक्रीय हो सकते है। रचनात्मक कार्य फलीभूत होगें। जमीन–जायदाद में कुछ अड़चने आने की आशंका है।

आर्थिक पक्ष: आर्थिक स्थिति में कमी आएगी।

स्वास्थ्य: स्वास्थ्य अच्छा रहेगा लेकिन आँखों का विशेष ख्याल रखें।

कैरियर व व्यवसाय: व्यवसाय करने वालों के लिए यह समय चुनौतीपूर्ण रहेगा। नौकरी करने वाले लोग अपने सहयोगियों से परेशान रहेंगे।

वैवाहिक स्थितिः हालात पहले से बेहतर होंगे।

प्रेम–प्रसंगः प्रेमीजन अपने प्यार की अहमियत को समझें।

शुभ रंगः नीला रंग

शुभ अंकः 7, 20

वृश्चिकः

इस राशि वालों के लिए यह महीना अच्छा कहा जायेगा। आपको अपने दायरे से बाहर निकलकर ऐसे लोगों से मिलने–जुलने की जरूरत है, जो ऊँची जगहों पर हों। घरेलू मोर्चे पर बढ़िया खाने और गहरी नींद का पूरा लुत्फ आप ले पाएंगे। आज आप नए विचारों से परिपूर्ण रहेंगे और आप जिन कामों को करने के लिए चुनेंगे, वे आपको उम्मीद से ज्यादा फायदा देंगे।

आर्थिक पक्षः आर्थिक पक्ष आपका मजबूत होगा।

स्वास्थ्यः स्वास्थ्य में सुधार होने की संभावना है।

कैरियर व व्यवसायः व्यवसाय के लिए यह समय सामान्य रहेगा। नौकरी में तरक्की मिलने के आसार बन रहे है।

वैवाहिक स्थितिः वैवाहिक जीवन में थोडा असहज स्थिति उत्पन्न हो सकती है।

शुभ रंगः महरून, काला

शुभ अंकः 27, 29

धनुः

इन राशि वाले जातको के लिए जून का महीना सामान्य कहा जा सकता। सामाजिक प्रतिष्ठा में बढ़ोतरी होगी अपनी ऊर्जा का इस्तेमाल किसी मुश्किल में फँसे इंसान की मदद करने के लिए करें। नए विचार और नई सोच के साथ नए कार्यो का सृजन होगा धन का उपयोग व्यर्थ के कार्यों में न करें वरना आगे समस्या आ सकती है।

आर्थिक पक्षः मानसिक तनाव के कारण आर्थिक पक्ष कमजोर हो जायेगा।

स्वास्थ्यः उदर की समस्या से आप ग्रसित रहेंगे।

कैरियर व व्यवसायः अध्यापन का कार्य करने वाले लोगों को लाभ होगा। थोक व्यापार में कोई बड़ा लेन–देन न करें।

वैवाहिक स्थितिः आपके जीवनसाथी आपके ऊपर खास ध्यान देंगे।

प्रेम–प्रसंगः प्रणय सम्बन्धो में कटुता आएगी।

शुभ रंगः पीला रंग

शुभ अंकः 6, 16

मकरः

इस राशि वालो के लिए यह महीना मध्यम रहेगा। आपका जीवन साथी आपके आर्थिक स्थिति को मजबूत करने में सहयोग देगा। संतान पक्ष से आपको परेशानी का सामना करना पड़ेगा। नए कार्य का प्रारम्भ इस महीने आपको सफलता दिलायेगा, कुछ बड़े सौदे इस माह होने के अवसर बनेगे।

आर्थिक पक्षः इस महीने आपकी आमदनी मे धीमी प्रगति रहेगी।

स्वास्थ्यः खान पान संयमित रखे।

कैरियर व व्यवसायः मार्केटिंग की नौकरी करने वालों के लिए स्थान परिवर्तन के योग बन रहे हैं। व्यवसाय करने वाले उधारी न करे।

वैवाहिक स्थितिः दाम्पत्य जीवन में आपसी तालमेल अच्छा रहेगा।

शुभ रंगः ब्राउन और खाकी कलर

शुभ अंकः 3, 21

कुंभः

इस राशि वालों के लिए जून का महीना सामान्य नही रहेगा। इस समय गुरुजनो का सम्मान करे और आशीर्वाद अवश्य ले। मुमकिन है कि घर में आपको अपने बेपरवाह रवैये की वजह से आलोचना का सामना करना पड़े।किसी मामले में दखलअंदाजी न करें। मानसिक शान्ति बहुत महत्वपूर्ण है इसके लिए आप किसी बगीचे, नदी के तट या मंदिर पर जा सकते हैं।

आर्थिक पक्षः माह के प्रारम्भ में आमदनी अच्छी रहेगी लेकिन समय के साथ गिरावट आ जायेगी।

स्वास्थ्यः स्वास्थ्य में समस्या बनी रहेगी। खाने पर विशेष ध्यान दे।

कैरियर व व्यवसायः इस समय नया निवेश नुकसानदेह सिद्ध हो सकता है। नौकरी करने वाले लोग अपने सहयोगियों से परेशान रहेंगे।

वैवाहिक स्थितिः वैवाहिक जीवन में तना तनी का माहौल बना रहेगा।

प्रेम–प्रसंगः प्रेम करने वालों के लिए यह समय उत्तम रहेगा।

शुभ रंगः हल्का नीला और आसमानी नीला

शुभ अंकः 17, 40

मीनः

इस राशि वाले जातको के लिए यह महीना मध्यम रहेगा। आप अपने उद्देश्यों की पूर्ति करने में सफल रहेंगे, बशर्ते इसके लिए आप दूसरों से मदद लें तो। दूसरों को यह बताने के लिए ज्यादा उतावले न हों कि आज आप कैसा महसूस कर रहे हैं। उन भावनाओं को पहचानें, जो आपको प्रेरित करती हैं।

आर्थिक पक्षः आपको अत्यधिक परिश्रम से ही धन लाभ होगा।

स्वास्थ्यः खानपान अच्छा रखे नहीं तो आप मोटापा जैसे रोग की चपेट में आ सकते है।

कैरियर व व्यवसायः व्यवसाय में प्रगति होने की तरफ अग्रसर होंगे। नौकरी वाले लोग अपने सहयोगियों से सम्बन्ध अच्छे रखे।

वैवाहिक स्थितिः वैवाहिक स्थिति में धीरे धीरे सामंजस्य बढेगा।

प्रेम–प्रसंगः प्रणय सम्बन्धो में संवाद बनाये रखे।

शुभ रंगः पीला

शुभ अंकः 8, 10

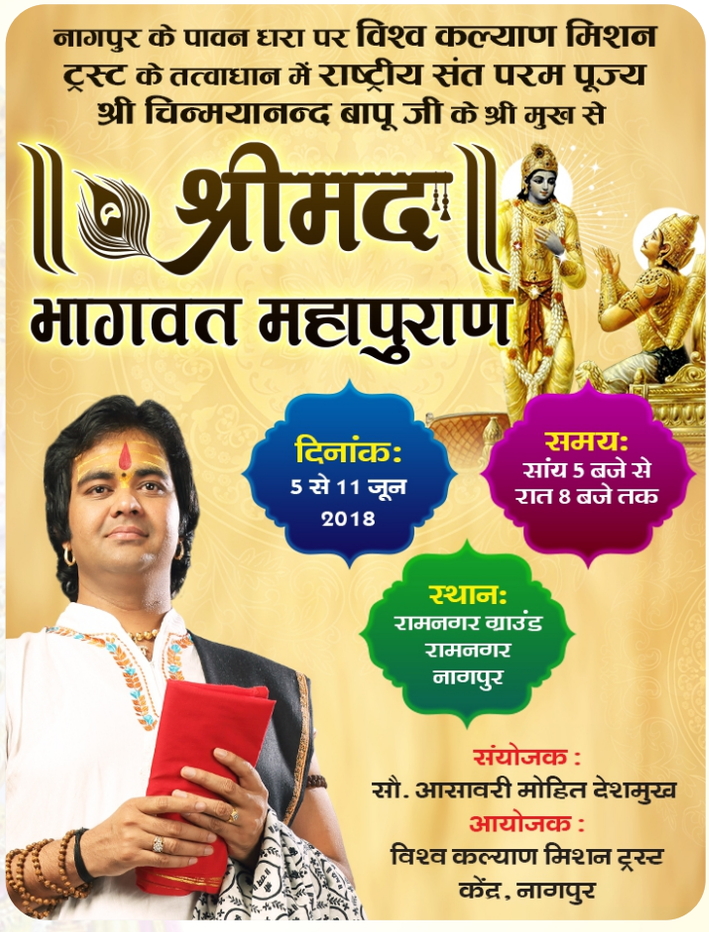

भक्ति दर्शन

भक्ति का महासंगम

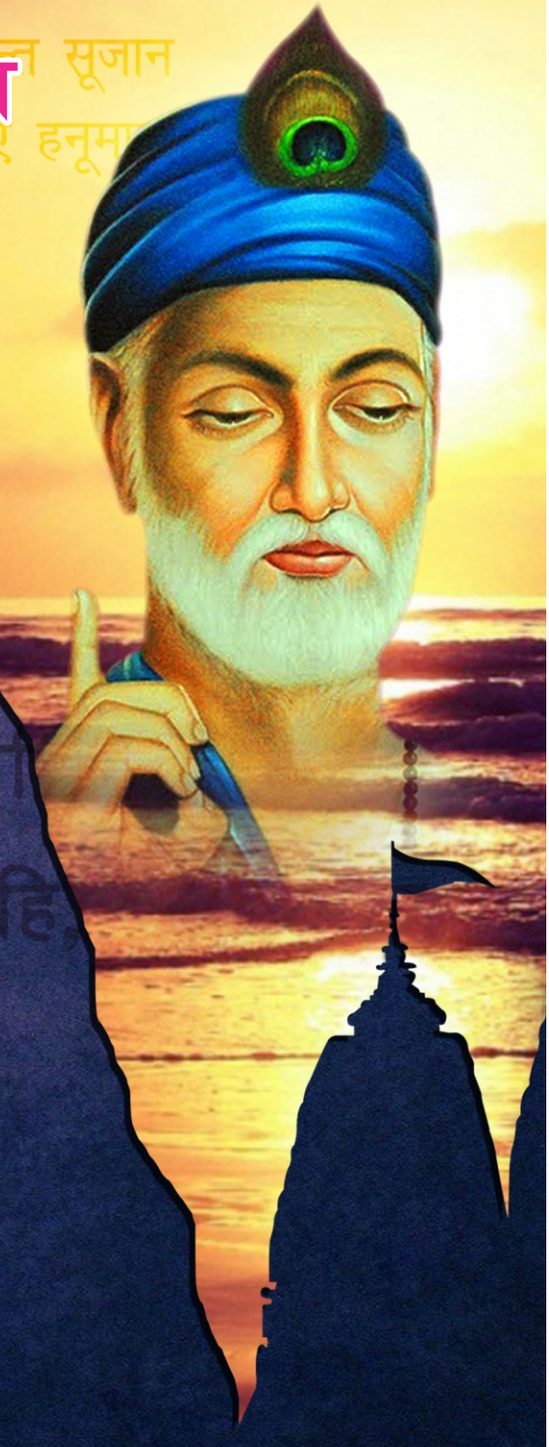

भक्ति दर्शन
भक्ति का महासंगम

web: bhaktidarshan.in

DOWNLOAD THE BHAKTI DARSHAN APP.
ENJOY 5K+ VIDEO AND AUDIO BHAJANS, AARTIS, BHAGWAT KATHA,
DEVOTIONAL QUOTES, DEVOTIONAL WALLPAPERS AND MORE.